

This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit. The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

https://www.namami.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi https://egangotri.wordpress.com/

## कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय ग्रंथालय, रामटेक

हस्तलिखित संग्रह

| दाखल क्र         | विषय . २०११ र |
|------------------|---------------|
| नांव ।शि.श्रिगा। |               |
| लेखक/लिपीकार     |               |
| 멸용               | - Traff       |
| काळ पूण/         | अपूर्ण        |

## अभिग्रहमानीया

श्रीवं यसंत्रमातं परमाशिव मतं यत्य वक्ता महेशः। प्रष्टीदेवी मिंभेशी बिछिरवतिक समा भारती काग क्षी भूः। नाथा ब्राह्मरा वरेन निर्धात शरभो रक्षको या हिंधीधा वियार वातारो नमस्ति -तरणमार्ते थयो । सन्त ते भयो यसभा ॥ श्रीनाथादेगुरा ।। २॥ नेदांतार्थ विभारवकाथ गुरवे शांताय संन्यासिने तनानावादि नगेंद्रसंघपवयं जोगीं द्वंद्याय-य ॥ माहध्वांतादिवानहराय भगवत्पादााभिषां। विभूते। तसी भाष्यकृते नमोस्तु सततं पूर्णायं अधिसम्ब ॥ उ॥ सत्यंप्रयाय प्रथनाय तिथे ।शिथेश्वतार्थः ।। उक्ते महत्यंगमतं यसने अरिशंन्यानं ये युरंतमीडे ॥ ग श्रीयोभार्गाने रूपणाय शरणापन्तेषु बद्धाद राः। द्वरिष्ठाते नारि चकाविभवीकारप्रकारोत्तराः॥ साष्टाणं प्रणमन्तरेष्ठ मुक्ती रत त्रभा मेद्राः॥ श्रीमद्भारकाष्यारतीषद् नरव ज्योत्सनोकुराः पातुनः॥ धा श्रीसां वाश्वाश्वाश्वाश्वाश्वाश्वाश्वारं अस्मादा-बार्थपर्थतां बंदे गुरूपरंपरां ॥६॥ अनुसरमहासंवित् स्वातः स्व-यंवद-यापिणे ॥ श्री अं माने प्ताथाय गरी नाय गर ने नमः॥ ७॥

कवाभ्यां चुडातं कृत विशाशिकताभ्या निततपः फताभ्यां भक्तेषु प्रकारितफताश्यां भनतु मे। शिवाभ्यामस्ताक विशुवनाशिवाभ्यां हत्युन-भीवाभ्या मानंदस्फ्रद्वभगभ्यां नितियां॥ डा। शिते डास्मिन् सगदीरृते पेशाते च श्रीयः प्रमानाम् ॥ श्तांतियति समस्तामारागुणशामैकसीपायते।। उन्खारतिमधीतिनिर्मस्यासेत प्रस्तिनिया व्या-चिर्शिवनामयस्यावभवं तस्मै परसीनमः॥ ९॥ गुर्तित्यान्वयातो के सार्नादियादिगांकारी॥ अयादा नमस्य दथाद्वीये छितंतरं ॥ १० ॥ स्व प्रकाशाविम शिल्माशिव शालियातमकं मरः॥ \* अर्धितकां तां वेद संदेशनारानं ॥ ११॥ यश्चित्रेनामस्पान्यां यादिनी मर्विमंगता। यथाः संस्परणानित्यं मंगाताय जयायार् ॥ १॥ अयेतमात्मनस्त वं दर्शमंती मिथस्तरा मी वर्ष जगतामाधी तथां सात्वाभी पत्ते ॥१३॥

```
[OrderDescription]
,CREATED=14.11.19 10:21
,TRANSFERRED=2019/11/14 at 10:23:02
,PAGES=4
,TYPE=STD
,NAME=S0002088
,Book Name=M-506-SHIVSTUTI
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
```